॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मार्च 2023 वर्ष 27, अंक 03 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2079 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

टंकारा ऋषि बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

टंकारा समाचार का विमोचन करते हुए बाये से दायें आचार्य रामदेव, श्री विपिन भाई एल पटेल, श्री महेश वेलाणी, डॉ. अविनाश भट्ट, श्री योगेश मुंजाल, श्री अजय सहगल, पद्मश्री डॉ0 पूनम सूरी, श्री अरूण अब्रोल, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, स्वामी सच्चिदानन्द, श्रीमती मणी सूरी एवं श्रीमती भानु बेन

दिनांक 12 फरवरी से 18 फरवरी 2023 तक ऋषि जन्म भूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ0 पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 2000 आर्य जनों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया जिसमें अधिकतर स्थानीय लोग ही थे।

इस वर्ष भी इस ऋषि बोधोत्सव को आर्य सन्देश टी वी चैनल के माध्यम से पूरे विश्व में देखा गया और इसके अतिरिक्त इसे अन्य 20 चैनलों पर भी देखा गया। तकनीकी व्यवस्थाओं से पता लगा है कि दिनांक 18–02–2023 के कार्यक्रमों को कुल मिलाकर लगभग 90,000 ऋषि भक्तों ने देखा। उनमें बहुत से अतिवृद्ध थे जो अभी तक टंकारा नहीं गए थे और टंकारा जाने का उनका स्वप्न पूरा नहीं हो रहा था। कुछ महानुभाव ऐसे भी थे जो सीबीएससी की परीक्षा प्रारम्भ होने के कारण टंकारा नहीं जा सके थे। सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की है। यजुर्वेद पारायण यज्ञ 12 फरवरी 2023 से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। दिनांक 12 फरवरी से 18 फरवरी तक प्रातः 6 बजे से टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋषि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में प्रभात फेरी निकाली गई। इसी अवसर पर दिनांक 16,17,18 फरवरी 2023 को योग एवं स्वास्थ्य सत्र का आयोजन स्वामी शान्तानन्द जी के नेतृत्व में बृजमोहन मुंजान योग साधाना केन्द्र में प्रातः 5 बजे से हुआ जिसमें टंकारा में पधारे हुए आर्य जनों ने सम्मिलित होकर लाभ लिया।

मंच पर भजन प्रस्तुत करते हुए श्री अंकित उपाध्याय

दिनांक 16–02–2023 को दोपहर 1 बजे से प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन स्वामी शान्तानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ जिसके संचालक श्री देवजी आर्य थे।

दिनांक 17–02–2023 को प्रातः

(शेष पृष्ठ 4 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पॉज़ीटिव बनो?

- पदमश्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

मंच चाहे राजनीति का हो या धर्म का, सर्वत्र एक ही नारा है 'पॉज़िटिव बनो'। नकारात्मकता बुरी चीज है। सृजन, रचना या निर्माण की बात करो। ध्वंस या विनाश की नहीं। गिलास को आधा खाली न कहकर आधा भरा हुआ कहो।

पर क्या सचमुच यही सही है? महर्षि दयानन्द के अनुसार 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'' वेद कहता है-**''दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्न आसुव।''** अर्थात् हमारे दुर्गुण दुर्व्यसनों को दूर करो और जो कल्याण कारक है उन गुणों का हममें प्रवेश कराओ। खण्डन-मण्डन, नेगिटिव-पॉज़िटिव, बुराई-भलाई आदि में नकारात्मक पहले हैं और सकारात्मक बाद में। ध्वंस पहले है और निर्माण या सृजन बाद में। अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह अर्थात् हिंसा मत करो, चोरी मत करो, परिग्रह मत करो-ये सब नकारात्मक वाक्य हैं।

डा. राममनोहर लोहिया के 'अंग्रेजी हटाओ' आन्दोलन को जब नकारात्मक और ध्वंसात्मक बताकर बार-बार कोसा गया था तो उन्हें कहना पड़ा था-''कभी-कभी रचनात्मक शब्द से घृणा होने लगती है, जब यह विध्वंसात्मक का विकल्प बन जाता है। विध्वंस और रचना पूरक काम हो तो मजा आता है। एक के बिना दूसरा हर हालत में अधूरा है। लेकिन जहाँ रचना के बिना विध्वंस और रचना पूरक काम हो तो मजा आता है। एक के बिना दूसरा हर हालत में अधूरा है। लेकिन जहाँ रचना के बिना विध्वंस में लाभ, हानि दोनों की सम्भावनाऐं हैं वहाँ विध्वंस के बिना रचना में मुझको धोखा ही धोखा दीख पड़ता है।''

डा. लोहिया सैकड़ों ठोकरें खाकर जिस निष्कर्ष पर पहुँचे उसे यजुर्वेद ने सृष्टि के आदि में ही कह डाला था:-

अन्धत्तमः प्रविशन्ति ते येऽसम्भूति मुपासते।
ततो भूय इव ते तमो यऽउ सम्भूत्यां रताः॥
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते॥

अर्थात् ध्वंस की उपासना करने वाले घटाघोर अँधेरे में प्रवेश करते हैं किन्तु उससे अधिक अँधेरे में वे प्रवेश करते हैं जो रचना या निर्माण में ही लगे रहते हैं।

जो रचना तथा ध्वंस दोनों के सापेक्षिक महत्व को जानता है वह ध्वंस या विनाश के द्वारा मृत्यु को पार करके रचना या निर्माण के द्वारा अमृत प्राप्त करता है।

स्पष्ट है कि ध्वंस की महत्ता सृजन की अपेक्षा बढ़ कर है। उसे प्राथमिकता दिये बिना सृजन व्यर्थ है। महात्मा गाँधी ने स्वाधीनता संग्राम में अहिंसा के साथ असहयोग और अवज्ञा (सिविल नाफ (मानी) पर इसीलिए बल दिया था क्यों कि अंग्रेजों को भगाये बिना अपनों को राज्य दिलाना किसी भी सूरत में सम्भव न था। बिजली की तारों में भी निगेटिव तार के बिना केवल पाज़िटिव तार काम नहीं करती। अब आप ही विचार करें कि केवल 'पाज़िटिव बनो' पर जोर देना कितना सार्थक या निरर्थक है?

-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। **वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रूपये के लगभग प्राप्त हो रही है।**

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 25,000/- रुपये गाय की खरीद हेतु सहयोग राशि भेज रहे है। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **सुनील मानकटाला** (कोषाध्यक्ष) **अजय सहगल** (मन्त्री)

देखा न कोई ऐसा ऋषिवर का दीवाना

वैसे तो हम सभी उस देव दयानन्द के दीवाने है, पर यही एक सांझा कारण है कि हम सब आर्य समाज के माध्यम से वेद प्रचार, सामाजिक सेवा एवं अन्य प्रकल्पों द्वारा अपना सर्वस्व अर्पित किए हुए हैं। पूरे विश्व में लगभग हर स्थान पर आपको दयानन्द के दीवाने मिल जायेंगे, चाहे संख्या में कमी क्यों न हो लेकिन आर्य समाज का सत्संग में संगठित हो। अपनी जड़ो से जुड़ने का प्रयास करते हैं। आर्यसमाज का भवन है या नहीं कोई चिन्ता का विषय नहीं सुविधाजनक स्थान पर एकत्र हो साप्ताहिक सत्संग कर लेते है। विदेशों में जहां विपरीत संस्कृति है वहां साप्ताहिक सत्संग कर पाना भी एक चुनौती होती है।

स्वदेश में हम झगड़ते है पर उस दयानन्द के कार्यो को आगे बढ़ाने में निरन्तर लगे रहते है। गुट बनाते है, विरोध करते लेकिन उसी ओ३म् ध्वज के नीचे खड़े होकर उसी को सम्मान देते है और आर्य समाज का कार्य करते है। ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार कितना भी क्यों न हो सत्संग में सभी अनुशासन में सम्मिलित होते हैं क्योंकि ध्येय केवल एक ही होता है। दयानन्द, वेद प्रचार और सामाजिक कार्य करना। न अच्छी आदते छोड़ेगे और न ही बुरी आदतें। दोनों को साथ-साथ ही चलायेंगे। परन्तु कितने दिन? एक दिन ईश्वर के न्याय के आगे झुकना होगा और बुराई अहंकार को छोड़ केवल अच्छाई की ओर जाना होगा। सब अपने-अपने विवेक से सोचे और अपने कार्य को प्रशस्त करें। जिस एक व्यक्ति के व्यक्तित्व ने मुझे इस लेख लिखने के लिए प्रेरित किया उसके व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें उपरोक्त चर्चा की ओर ध्यान आकर्षित करना ही था।

इस व्यक्तित्व को पिछले कुछ वर्षो से अत्यन्त निकटता से देखने और समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप परिवार की वैदिक संस्कृति को निभाने वाली तीसरी पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हैं। विरासत में वैदिक मान्यताएं, बाल्यकाल से ही घुट्टी के रूप में प्राप्त हुई और आज यह मान्यताएं इतनी परिपक्व हो चुकी है कि उन्हें हिला पाना संभव नहीं है। प्रथम बार आपको जब यज्ञ पर उपस्थित देखा तो चकित रह गया। आप यज्ञ में इतने आनन्द से सम्मिलित थे जैसे अपने किसी ऐसे मन चाहे गीत को गा रहे हो। एकदम मस्त हो केवल ध्यान यज्ञ में, यज्ञ और मन का ऐसा समन्वय कि यज्ञ स्थल से बाहर की कोई आवाज जैसे उन्हें सुनाई ही नहीं दे रही। प्रार्थना मन्त्र बोलते हुए यज्ञवेदी पर बैठे आनन्दित हो झूमते है। ऐसा मैने अपने जीवन में प्रथम बार देखा क्योंकि मैं आश्चर्य चकित था कि मैंने व्यक्ति अपने शरीर से यज्ञ करते देखा परन्तु शरीर और मन से पहली बार, क्योंकि आपका, शरीर, मन और मन्त्रों उच्चारण में समन्वय और संबंध देखते ही बनता है। ऐसा ही एक अवसर आया इस वर्ष टंकारा में उपस्थित इस देवदयानन्द के दीवाने का दीवानेपन आप सपत्नीक टंकारा में आयोजित यज्ञ की पूर्णाहुति पर मुख्य यज्ञमान के रूप में उपस्थित थे। देर रात मुम्बई से आने पर आप राजकोट में ही ठहर गए। प्रात: मैंने दूरभाष पर चर्चा की कि यज्ञ प्रात: 8.30 बजे प्रारम्भ होगा और राजकोट से टंकारा सड़क मार्ग से 1.30 घंटे लगते है। इस कारण आप 8.30 बजे अवश्य चल पड़े। आपने उत्तर दिया कि हम ठीक समय पर पहुंचे जाएंगे। मैंने आगे आग्रह किया कि चलने से पूर्व हल्का अल्पाहार राजकोट में कर लेवे क्योंकि लगातार यज्ञ के उपरांत ध्वजारोहण करने तक 12.30 बज जायेगें। उनका मेरे इस निवेदन का उत्तर मुझे फिर प्रभावित कर गया। आपका उत्तर था ''कि हम पति-पत्नी यज्ञ के पूर्व अन्न-जल ग्रहण नहीं करते।''

हम अपने आप में विवेचन करें कि हम इस प्रण को कितना निभाते है। आयु के अनुसार यात्रा के समय दवा आदि लेने हेतु कुछ खा ही लेते है क्योंकि कुछ दवाएं खाली पेट लेना संभव नहीं लेकिन साधुवाद देना चाहूंगा इस दीवाने दम्पत्ति को जिन्होंने अपने प्रण को टूटने नहीं दिया। मुझे गर्व है कि मेरा इस निष्ठावान आर्य से सम्बन्ध है।

अन्त में मैं सूचित करना चाहूंगा कि ये व्यक्ति और कोई नहीं आर्यपुत्र श्री पूनम सूरी जी हैं, आप डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंन्ध कर्त्री समिति के प्रधान एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान है, साथ ही टंकारा ट्रस्ट के प्रधान भी है। मैं लगभग आठवीं कक्षा में डी.ए.वी. चित्रगुप्ता रोड, पहाड़गंज में पढ़ता था तो उस समय डा. जी.एल. दत्ता प्रधान हुआ करते थे। उनके उपरांत सभी प्रधानों को मैंने यज्ञ करते हुए, सामाजिक समारोह में सुना और उनकी कार्यशैली से भी भलीभांति परिचित रहा। सभी आर्य थे परन्तु श्री पूनम सूरी जी जैसी दयानन्द के प्रतिलगन, श्रद्धा और प्रेम किसी में भी नहीं देखा। हमें गर्व है ऐसे आर्यपुत्र पर जिनके नेतृत्व में डी.ए.वी. एवं आर्यसमाज एक नई चुनौती और उत्साह के साथ नये कीर्तिमान स्थापित करने के लिए तत्पर है।

तभी तो कहा ''देखा न कोई ऐसा ऋषिवर का दीवाना''।

अजय टंकारावाला

टंकारा की सुर में सुर मिलाने पूनम सूरी आया

आज टंकारा की जमीं पर
दयानन्द का अक्ष उतर आया है।
सितारों की इस महफिल में
पूनम का चाँद नजर आया है।
दिल में वैदिक धर्म का तूफान
लबों पर लेकर नाम दयानन्द का
कर्मक्षेत्र में देखो उसने
आर्यसमाज का सत्संग रचाया है।
ले चरण रज दयानन्द की,
मस्तक अपना बारम्बार, नवाया है,
अपनी इसी अदा से उसने
आशा का दीप जलाया है।
धन्य धन्य है ये धरा दयानन्द स्वामी,
एक बार फिर
तेरे सुर में सुर मिलाने
पूनम सूरी आया है।
हे प्रभू! दिल को उसके इतना रोशन कर दे,
नई उमंग और नवशक्ति से भर दे।
दिल के अज्ञान और अन्धकार दूर कर दे,
क्योंकि भरोसा आर्यो का लेकर इसने,
डी.ए.वी. को दयानन्द के सपनों से सजाया है
विद्यार्थी कहे ओ३म् की साधना करके
इसी ने आनन्द पद पाया है।

- डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जीन्द

उद्घाटन

वेद पाठ करते हुए आचार्य रामदेव जी एवं ब्रह्मचारीगण

आचार्य रामदेव जी का वरण करते हुए श्रीमती एवं श्री अरूण बहल

विभिन्न प्रान्तों से पधारे गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान, बाएं से श्रीमती एवं श्री अरूण बहल, श्री एस. पी. सिंह, श्रीमती भानु बेन

श्रीमती एवं श्री डॉ. अशोक कुमार आर्य

श्री अरुण बहल

श्रीमती एवं श्री विपिन भाई एल पटेल

(पृष्ठ 1 का शेष)

8–00 बजे से टंकारा ट्रस्ट की मुख्य यज्ञशाला में यज्ञ आरम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में श्री अरूण अब्रोल, श्री एस के शर्मा, श्री प्रदीप भाई वेलाणी परिवार, श्री महेश वेलाणी परिवार एवं श्री अरूण बहल परिवार के सदस्य उपस्थित थे। आचार्य रामदेव जी ने अपने प्रवचनों से यज्ञशाला में उपस्थित ऋषि भक्तों को लाभान्वित किया। तदुपरान्त टंकारा के ही पूर्व स्नातक श्री अंकित उपाध्याय (गुरूग्राम) के भजन प्रस्तुत किए गए और जिसकी सभी पधारे महानुभावों ने सराहना की। भजनों के उपरान्त आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी द्वारा प्रवचन प्रस्तुत किया गया जिसकी सभी महानुभावों ने भूरि भूरि प्रशंया की। तदुपरान्त टंकारा के आर्य वीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं विभिन्न प्रकार के आसनों का प्रदर्शन किया गया और विजयी टीमों एवं प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किए गए। सायं 5 बजे से टंकारा ट्रस्ट की मुख्य यज्ञशाला में पुनः यज्ञ आरम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती एवं श्री विपिन भाई पटेल (मुम्बई) श्री एस के

यज्ञ

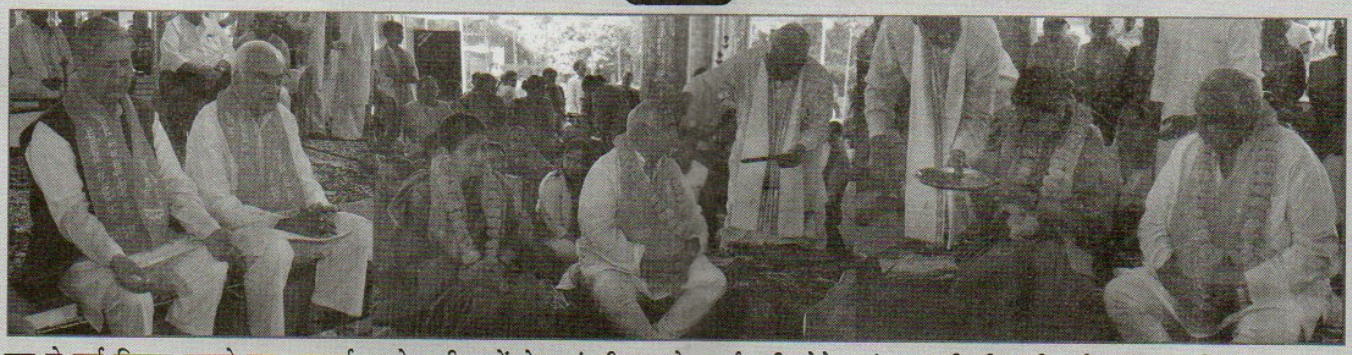

यज्ञ से पूर्व तिलक लगाते हुए आचार्य रामदेव जी बायें से दायं श्री एस.के. शर्मा, श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती मणी सूरी एवं पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

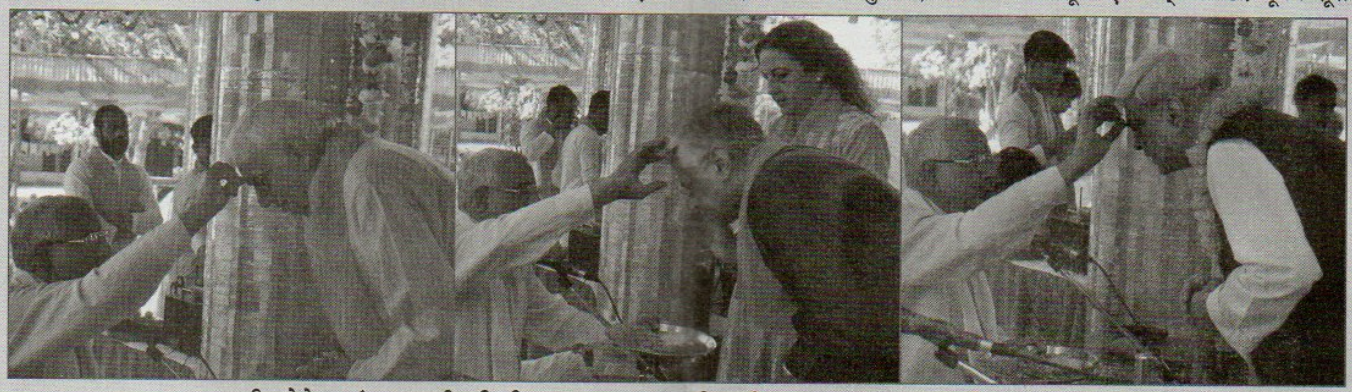

श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती रीटा मानकटाला, श्री सुनील मानकटाला एवं श्री अरूण बहल

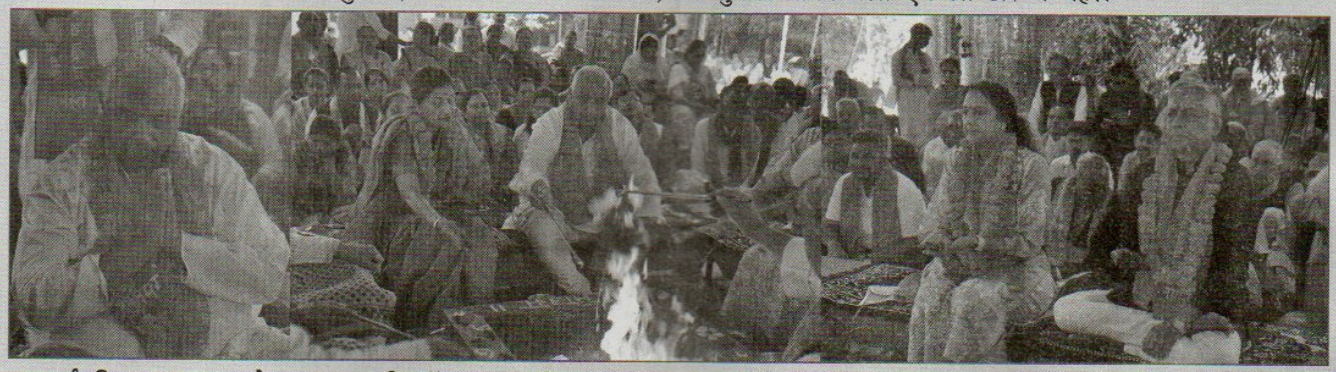

पूर्णाहुति का यज्ञ करते हुए पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी, श्रीमती मणी सूरी, श्रीमती रीटा मानकटाला एवं श्री सुनील मानकटाला

शर्मा, श्री अरूण अब्रोल, श्री अरूण बहल आदि उपस्थित थे।

दिनांक 17–02–2023 को रात्रि 8 बजे वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत कार्यक्रम का आयोजन कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ किया गया जिसमें श्री अंकित आर्य के भजन प्रस्तुत किए गए और आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी द्वारा प्रवचन किए गए।

दिनांक 18–02–2023 प्रातः 6 बजे से टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋषि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में प्रभात फेरी निकाली गई। तदुपरान्त प्रातः 10–30 बजे मुख्य यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान दिल्ली से पधारे टंकारा ट्रस्ट के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी सपत्नीक, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं डी ए वी पब्लिकेशन के निदेशक श्री एस के शर्मा , डॉ. अविनाश भट्ट, श्री विपिन भाई पटेल श्री विपिन उभाई वेलाणी एवं पिछले एक सप्ताह से चल रहे ऋग्वेद पारायण यज्ञ में बने यजमानों ने क्रमशः यज्ञवेदी पर उपस्थित होकर अपनी आहुति दीं। सर्वप्रथम पद्मश्री आर्यरतन डॉ. पूनम सूरी जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया। तदुपरान्त अग्निद्धान कर यज्ञ आरम्भ किया। यर्जुवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः 11–00 बजे सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त टंकारा के ही पूर्व स्नातक श्री अंकित उपाध्याय के भजन एवं आचार्य विष्णमित्र वेदार्थी के प्रवचन प्रस्तुत किए गए। तदुपरान्त डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुंचें। ट्रस्ट की ओर से

ऋषि बाधोत्सव कार्यक्रम की झलकियां

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी का सम्मान करते हुए श्री अरूण अब्रोल, श्री विपिन भाई एल पटेल, श्रीमती मणी सूरी का सम्मान करते हुए श्रीमती भानु बेन

ऋषि स्मृति सभा में उद्‌बोधन देते हुए पदम्‌श्री डॉ. पूनम सूरी, श्री एस.के. शर्मा, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी एवं श्री अजय सहगल

ध्वजारोहण

ध्वजारोहण स्थल पर पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी एवं श्रीमती मणी सूरी, ध्वजारोहण करते हुए दायें पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी एवं श्रीमती मणी सूरी

एवं अन्य पधारे हुए प्रतिनिधियों एवं आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। माननीय आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर श्री अंकित उपाध्याय एंव आर्य वीर दल द्वारा ध्वजगीत गाया गया। तदुपरान्त आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने शोभायात्रा को ओउम् ध्वज दिखाकर शोभायात्रा का शुभारम्भ कराया जोकि टंकारा गॉव की गलियों में होते हुए पुनः टंकारा परिसर में पहुंची।

दिनांक 18–02–2023 को दोपहर 2 बजे से ऋषि स्मृति समारोह का आयोजन कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी की

टंकारा समाचार ई-मेल और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध- माननीय पाठकों द्वारा दिए गए सुझावों एवम् टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा निर्णय लिया गया कि आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र ''टंकारा समाचार'' ई-मेल और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध कराया जाए। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपना सदस्यता संख्या एवम् नाम के साथ अपना ई-मेल अथवा व्हाट्सअप नम्बर भेजने की कृपा करें। उपरोक्त सूचना आप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर भेज कर पंजीकृत करा सकते है जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक

अध्यक्षता में आरम्भ हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी सपत्नीक पधारे। इस अवसर पर आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी एवं श्री एस के शर्मा जी द्वारा प्रवचन दिए गए और श्री अंकित उपाध्याय द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने टंकारा में ली गई 15 एकड़ भूमि में स्मृति स्थल पर किए जाने वाले निर्माण कार्य की विस्तृत जानकारी दी जिससे पधारे हुए सभी आर्य जन उत्साहित हुए।

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI ATHA ARYODDESHYA RATNA MALA

Choree Tyaag-To take something without permission from its owner is theft (Choree) and giving up this behavior is termed Relinquishing Theft (Choree Tyaag).

Vyabhichaar Tyaag-Adultery (Vyabhichaar) occurs when 1. a married man has sexual relation with another woman and vice versa. 2. The couple have sex for sexual pleasure and not for conception, 3. The couple have sexual intercourse excessively resulting in weakness and diseases, and 4. Marrying before becoming fully mature adults. Abandoning these behaviors is Relinquishing Adultery (Vyabhichaar Tyaag).

Jeeva kaa Swaroop- The soul`s nature is consciousness, finite knowledge, desire for things, dislike for pain etceterea, effort, joyfull, displeasure, has the quality to know and eternal.

Swabhaav-the inherent quality of something. For example, the inherent quality of fire is heat. Heat is the Swabhaav of fire. The Swabhav or inherent quality of a thing remains if that thing is in existence.

Pralay-Dissolution occurs when the current world ceases to exist and every aspect of matter returns to the material cause of the universe (upaadaan kaaran). Ishwar, the Divine Being, is the primary cause of the universe and creates this world from Prakriti and maintains it for a very long time. In the phase of Pralay, Ishwar`s rules inspire the objects in the mainfested world to return to their original state of Prakriti.

Maayaavee- Maayaa refers to behaviors that are deceitful, insincere, boast of selfishness, arrogant, egotistic, stbbornness and other flaws. That person who possesses these behaviors is a Maayaavee.

Aapt- The realize seer is free from deciet and other negative characteristics, Dharmik, a Vaidik Scholar, propagator of truth, very compassionate, and constantly works to remove the darkness of ignorance from ignorant people and inspire their lives with the light of wisdom.

Pareekshaa- Investigation of truth should be done using the eight Pramaanas (Sec 86-93), knowledge of the Vedas, purity of one`s life and following the rules of creation to discern truth from untruth.

Aath Pramaan- The Eight proofs or means of knowledge are Pratyaksh, Anumaan, Upamaan, Shabd, Aitihya, Arthaapatti, Sambhav, and Abhaav, which facilitate the knowledge of truth (Sec 86-93). Humans can use these methods to differentiate truth from untruth.

Lakshan- refers to that specific characteristic, whereby, a person can know the objective (Lakshya). Lakshan is the inherent quality of the Lakshya. For example, fire has a visible form, which is the Lakshan of fire (lakshya).

Prameya- the knowledge of something is known by Pramaan-measurable evidence. For example, eyes acquire the knowledge of visual stimuli (Prameya). Prameya knowledge of the world is acquired by the senses.

Pratyaksh-Direct sensory experience or perception involves the direct contact of the five sensory stimuli (sound, touch, sight, taste, and smell) with the five senses of knowledge (ears, skin, eyes, tongue, and nose) and the mind.

(Commentary- For example, a child asks for milk. Pratyaksh occurs when a parent brings milk and gives the child to drink).

Anumaan-Inference occurs when we have partial knowledge of something we saw we can infer correctly about what is missing.

(Commentary: For example, someone won a marathon: We did not observe when this person trained for it, but we can infer that this person practiced running a lot and trained his body for a very long time.

Upamaan-Comparison occurs when we use knowledge of something we know about to learn about something we do not know about. For example, someone said an antelope resembles a cow. In this example, the person has knowledge of a cow. On seeing an antelope, he/she can look for features like a cow and infer that it is an antelope.

Shabd-The teachings and words of the Omniscient Being and Aapt people (Rishis who are free from ignorance and bias) are referred to as Shabd Pramaan, Verbal Evidence.

Aitihya- Historical texts are evidence when they correspond with Shabd Pramaan (Sec 89), are free from lies, misinformation, and pass the test of Sambhav Pramaan (Sec. 92).

Arthaapatti-occurs when someone says something and the listener can understand the implication without another person`s explanation.

(Commentary-For example, someone said there are thick, dark clouds hovering above. The listener implies that it may rain shortly).

Sambhav-Possibility is based on Pramaan-proofs, reasoning, and rules of the creation.

(Commentary-Samhav means possible. For example, someone heard that a person has eyes at the back of his head. Based on knowledge of the human body and its functions, the person would know this is incorrect based on the Sambhav method of evidence. It is impossible).

Abhaav-Someone asks for tap water to drink, but the person does not see a tap nearby. However, there is a water fountain in the vicinity. The person gets water from the fountain and gives the person. This is Abhaav Pramaan (evidence from non-existence), which is when something is lacking in one place, one should have the knowledge to find it in another place.

Shaastra-refers to those texts that promote true knowledge and educates people to learn truth from untruth.

Veda-The Vedas are the eternal knowledge of Ishwar, contain true knowledge and are written in four books namely, Rig Veda, Yajur Veda, Saam Veda and Atharva Veda Samhitaas. Human beings can acquire true knowledge by studying the Vedas.

(Commentary-Maharishi Dayanand Saraswati writes in Rig Vedaadi Bhaashya Bhoomikaa "The Eternal Divine teacher, Ishwar, Inspired four Rishis, Agni, Vaayu, Aaditya, and Angira with the knowledge of the four Vedas respecrtively, Rig, Yajur, Saam, and Atharva".)

Cont...

પ્રભામેરુ હતા સ્વામી દયાનન્દ

મૂળ લેખક: પ્રા. ડૉ. વિક્રમ કુમાર વિવેકી

અનુવાદક: રમેશચન્દ્ર મહેતા, ટંકારા

પ્રભામેરુનું સ્વરૂપ

સૈંકડો વર્ષ પૂર્વે ભારતના ગોલકોંડાની ખાણમાંથી એક હીરો નીકળ્યો હતો – જેનું નામકરણ થયું હતું – **કોહેનૂર**. કોહ-એ-નૂર એટલે નૂરનો કોહ એટલે કાન્તિનો પર્વત. અસલ હીરામાં ઘણા બધા પાસા હોય છે. એક પાસામાં પ્રકાશ પ્રવેશ કરીને બાકીના બધા પાસાઓમાંથી એક સાથે બહાર નીકળવાને કારણે હીરાનો ચળકાટ વધી જાય છે. એટલે જ આવા હીરાની તુલના બીજા કોઈ સાથે ન થઈ શકે.

તેઓ પણ અનુપમ હતા:

ગુજરાતના મોરબી રાજ્યાન્તર્ગત ટંકારા ગામમાં ઓગણીસમી શતાબ્દીમાં જન્મેલા સદીના મહાનાયક દેવ દયાનન્દનું વ્યક્તિત્ત્વ પણ કોહેનૂરી વ્યક્તિત્ત્વ હતું. જે ચારે બાજુએથી દિવ્ય પ્રભાથી દમકતું હતું. વિભિન્ન પાસાઓથી સજાયેલું એમનું જીવન, જેનાથી પ્રભાવિત થઈને અનેક માનવરત્નો પ્રકાશી ગયા. ઈશ્વર વિશ્વાસ, વેદ માટેની આસ્થા અને યોગ તરફની શ્રદ્ધા રૂપી આધ્યાત્મિક પ્રકાશથી એમના વ્યક્તિત્ત્વના બધાંજ પાસાઓ આભાથી છલકાઈ ઉઠ્યા હતા જેના દિવ્ય આલોકથી સમ્પૂર્ણ સમાજે પોતાનું માર્ગ-દર્શન પ્રાપ્ત કર્યું હતું. અદ્‌ભૂત વિદ્વતા, અદ્‌ભૂત શારીરિક બળ, અજેય ઉત્સાહ અને અગમ્ય પરાક્રમની સાથે જે અનુપમ કાર્યનું એમણે બીડું ઉપાડ્યું હતું, એ પણ અદ્વિતીય હતું જ. સન્તો, મહન્તો, ધર્માચાર્યો અને વિવિધ સમ્પ્રદાય-પ્રવર્તકોની વચ્ચે અનુપમ અને નિરાળા સ્વામી હતા, જેમને લોકોએ મહર્ષિ, યુગ-નિર્માતા, વેદોદ્ધારક, સમાજ-સુધારક, અસત્ય-ખંડક અને સત્ય મંડકના રૂપમાં જોયા. સ્વામીજી સ્વયં ઇચ્છત કે લોકોને છુટ આપવામાં આવી હોત તો અવતારના રૂપમાં એમની પ્રતિષ્ઠા આજ દિવસ સુધી સુરક્ષિત હોત. પરન્તુ એમણે એમ બનવા જ ન દીધું, પોતાની જાતને સામાન્ય પુરુષ જ કહ્યા તથા એકમાત્ર તથા એકમાત્ર નિરાકાર, સર્વનિયન્તા, સચ્ચિદાનન્દ સ્વરૂપ ભગવાનને જ મહાન માનવાનો આદેશ આપ્યો. કોઈ મત-સમ્પ્રદાય ન બનાવતા માનવ સમુદાયને શ્રેષ્ઠ અર્થાત આર્ય બનવાની પ્રેરણા આપી – **કૃણ્વન્તો વિશ્વમાર્યમ્** (ઋગ્વેદ) સત્યવાદી હતા.

દયાનન્દ સત્યમાની, સત્યવાદી, અને સત્યકારી જ હતા. તેઓ પૂર્વાગ્રહી નહોતા, અપિતુ સત્યાગ્રહી અને વેદાગ્રહી હતા. વેદને ઈશ્વરીય શાશ્વત ગ્રન્થ માનીને સમગ્ર સમાજને, વિશ્વત: વિદ્વાનોને માત્ર સત્યના પ્રચાર માટે જ પ્રેરિત કર્યા. અસત્યને સર્વથા પાછળ મૂકી દેવાની વાત કહી. એમનો આગ્રહ હતો –

સત્યને ગ્રહણ કરવા અને અસત્યને છોડવા માટે સદૈવ તૈયાર રહેવું જોઈએ (આર્યસમાજનો નિયમ)

એમના સર્વચર્ચિત અને બહુચર્ચિત પુસ્તકનું નામ પણ **સત્યાર્થ પ્રકાશ** જ છે. જેને વાંચવા-વંચાવવા અને સાંભળવા-સંભળાવવાથી મનમાં સમ્યક્ ઉલ્લાસ જાગે છે. ગ્રન્થકર્તા સ્વામીજીએ પોતાના ગ્રન્થના અધ્યાયોને સમુલ્લાસનું જ નામ આપ્યું છે. રૂઢિઓ, અન્ધવિશ્વાસો, કુરીતિઓ, પાખંડો, કુપ્રથાઓ આદિની વાસ્તવિકતા બતાવીને એનાથી દૂર રહેવાનો ઉપદેશ આપીને આ અમર ગ્રન્થ સમસ્ત સંસારના લોકોના જ્ઞાનચક્ષુ ઉઘાડી નાખે છે. સત્યાર્થ પ્રકાશમાં સત્યાસત્યના નિર્ણય માટે નિષ્પક્ષ ભાવે જે આલોચના કરવામાં આવી છે એ કોઈનું દિલ દુભવવા માટે નહીં પણ વિશ્વની માનવતાનું રક્ષણ કરવા માટે છે.

એમના પોતાના જ શબ્દોમાં – "મારા આ કર્મથી જો ઉપકાર ન માનો, તો વિરોધ પણ ન કરશો. **કારણ કે મારો હેતુ કોઈને હાનિ પહોંચાડવાનો નહીં પણ સત્યાસત્યનો નિર્ણય કરવા-કરાવવાનો છે. હું મારું મન્તવ્ય એને જ કહું છું કે જે ત્રણે કાળમાં બધાને એક સમાન માનવા યોગ્ય છે. મારો કોઈ નવી કલ્પના કે મત-મતાન્તરની સ્થાપના કરવાનો હેતુ નથી. પરંતુ જે સત્ય છે એને માનવા તથા મનાવવાનો અને જે અસત્ય છે એને છોડવા તથા છોડવાનો હેતુ છે.**" સ્વામી દયાનન્દે અંગ્રેજો, મુસલમાનો, જૈનિઓ, પૌરાણિકો, વાઈસરોયો, રાજાઓ તેમજ પંડિતોની વચ્ચે જઈને નિડરતાની સાથે સત્યને જ રજુ કર્યું છે. જેમ એક કુશળ શલ્ય-ચિકિત્સક ઘા પર માત્ર પાટા પિંડી જ નથી કતા પણ પહેલા પહેલા આ ઘામાંથી પરુ-પસ બહાર કાઢે છે બસ એવી જ રીતે દયાનન્દે પણ પહેલા ખોટી માન્યતાઓને ઉઘાડી પાડી ફેંકી દીધી અને પછી મિથ્યાનું નિરાકરણ કરીને માત્ર સત્યનું જ પ્રતિપાદન કર્યું છે.

अमृतसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मदिवस पर भव्य कार्यक्रम आयोजित

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी, पद्मश्री अलंकृत, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के वरद् आशीर्वाद से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब व केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के तत्वावधान में महान संत, विद्वान, समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं पावन जयंती तथा ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर 15 फरवरी 2023 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। न्यायमूर्ति श्री प्रीतमपाल, उपाध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। शोभायात्रा के शुभारंभ का यह कार्यक्रम डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर से किया गया।

मुख्य अतिथि ने गणमान्य आर्यजनों को उनके द्वारा किए गए वैदिक संस्कृति तथा मानव कल्याण हेतु किए महान कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। उपस्थित को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एक महान शिक्षक, समाज-सुधारक होने के साथ साथ एक महान् राष्ट्र भक्त थे। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी शिक्षाएं प्रतिध्वनित होती थी। उनका मानना था कि जनता के उत्थान तथा समाज के पुनर्जागरण का एक मात्र तरीका शिक्षा का प्रसार और चरित्र बल का विकास ही है। इसके उपरांत मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रीतमपाल जी ने शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर यात्रा पथ पर अग्रसर किया। इस यात्रा में सबसे आगे आर्य ध्वज था उसके बाद ढोली, बैनर, घुड़सवार, सप्तऋषि सवारी, यज्ञ सवारी, वेद रथ, भजन मंडली और विभिनन डी.ए.वी. संस्थानों द्वारा तैयार झांकियों मुख्य आकर्ष थी।

डॉ. जे.पी. शूर ने इस भव्य कार्यक्रम उपस्थित आर्यजनों का स्वागत किया और अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रान्तिकारी विचारों और आदर्शों से आर्य समाज की नींव रखकर सामाजिक कुरीतियों में बंधे समाज को आलोकित कर बंधनमुक्त किया। सभी गणमान्य आर्यजनों ने विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों द्वारा तैयार आर्य महान् विभूतियों स्वामी विरजानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज, महात्मा आनन्द स्वामी एवं आर्य समाज पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल से प्रारम्भ शोभायात्रा बी.बी.के.डी.ए.वी. कॉलेज, लारेंस रोड, नावल्टी चौक, क्रिस्टल चौक, कपूर रोडद्व भंडारी पुल, हाल बाजार से होते हुए डी.ए.वी. कॉलेज, हाथी गेट, लोहगढ़ गेट, बी.के. दत्त गेट, कटड़ा सफेद आदि स्थानों से होती हुई तथा महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाते हुए आर्य समाज मंदिर, शक्ति में सम्पन्न हुई।

आर्य समाज मंदिर, शक्तिनगर में शोभायात्रा के समापन पर समस्त आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया जिसकी व्यवस्था विभिन्न आर्यसमाजों और डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों द्वारा संयुक्त रूप से की गई थी। स्थानीय पुलिस प्रशान द्वारा इस अवसर पर किए सुरक्षा के प्रबंध बहुत ही सचारु

और सराहनीय थे जिनके कारण यह भव्य शोभा यात्रा निर्वाध रूप से अपने निर्धारित पहुँच कर सफल हुई। दिनांक 12 से 18 फरवरी 2023 तक समस्त आर्य समाज व डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में दीपमाला भी की गई।

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❐❐❐

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❐❐❐

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❐❐❐

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❐❐❐

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❐❐❐

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❐❐❐

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

-:निवेदकः-

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

सुनील मानकटाला
कोषाध्यक्ष

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

दान

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वेद भगवान जहां मनुष्य मात्र को सैकड़ों हाथों से सात्विक धन ज्ञान आदि कमाने की अनुमति प्रदान करते हैं वहीं संग्रह किए हुए धन ज्ञान आदि को हजारों हाथों से बांटने, दान करने वा त्याग का भी आदेश देते हैं। अथर्ववेद में एक ओर जहां **शतहस्त समाहर**-अथर्ववेद 3/24/5 अर्थात् सैकड़ों हाथों से कमा वहीं **सहस्त्र हस्त संकिर** अर्थात् हजारों हाथों से बांट दे का स्पष्ट निर्देश दिया। जिस प्रकार एक स्थान पर रूका हुआ तालाब का पानी गंदा मैला व दूषित होकर प्रयोग के योग्य नहीं रहता ठीक उसी प्रकार एक व्यक्ति के पास तिजोरी में बंद धन वा बिना उपयोग ज्ञान भी सड़कर बेकार हो जाता है। वहीं दूसरी तरफ निरन्तर प्रवाहमान नदी का जल सदा साफ शुद्ध रहता है उसी प्रकार दान देने से धन और बांटने से ज्ञान की वृद्धि होती है संत कबीर ने भी कहा है- **चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी ना घटयो नीर। दान दिये धन ना घटे, कह गए संत कबीर।।** यहां अक्सर कंजूस लोग तर्क देते हैं बांटने से धन घटता है और धन तो संग्रह से बढ़ता है। परन्तु यह सोच उनके अल्पज्ञान को प्रदर्शित करती है। दान देने से धन की निश्चित वृद्धि होती है क्योंकि धन ऐश्वर्य सुख की प्राप्ति अर्थात् अच्छा प्रारब्ध वा नियति केवल ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में सद्कर्मों के फलस्वरूप होती है। शुभ कार्यों से दान दिया धन एक ऐसा सद्कर्म है जिसके फलस्वरूप कर्ता को निश्चित रूप से अच्छी नियति किस्मत वा धन की प्राप्ति होती है। ज्ञान बांटने से अर्थात् पढ़े हुए पढ़ाने के लिए बार-बार दोहराने से स्मृति में ज्ञान की वृद्धि और शोधन होती है और इस बात को पढ़ाने वाला आसानी से समझ सकता है।

ज्ञान व धन आदि का बांटना दान करना एक किसान द्वारा खेत में बोए गए मुट्ठी भर अनाज की भाँति होता है जो समय आने पर पुरूषार्थ के प्रतिफल प्रारब्ध के रूप में लहलहाती फसल प्रदान कर उसे कई हजार गुणा कर देता है जिस प्रकार देवताओं के मुख अग्नि में यज्ञ हवन के समय आहूत की गई थोड़ी सी औषधि युक्त सामग्री को अग्नि देव विभक्त करके कई हजार गुणा बढ़ाकर पूरे वातावरण में सबके उपयोग के लिए व्याप्त कर देते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य द्वारा दिया धन ज्ञान आदि का दान कई गुणा बढ़कर उसे प्राप्त हो जाता है।

ईशोपनिषद् में तेन त्यक्तेन भुंजीथा के माध्यम से ईश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त ऐश्वर्य के त्यागपूर्वक भोग करने की शिक्षा दी गई है अर्थात ईश्वर द्वारा प्रदत्त धन ऐश्वर्य को स्वार्थ, मोह, माया, ममतावश केवल अपना मानकर संग्रह कर लेना तथा उसका त्याग वा उपयोग ना करना मनुष्य के दुःख कष्ट का कारण बनता है।

वैसे भी ऋग्वेद में मनुष्य को चेतावनी दी गई है केवलाघो भवति केवलादी अर्थात अकेला खाने वाला पाप खाता है इसीलिए कहा गया कि जहाँ मनुष्य को सात्विक धन ज्ञान कमाने की अनुमति है वहीं उसका त्यागपूर्वक भोग अर्थात बांट कर खाने का आदेश है। बांटने वाले दानी का समाज में आदर होती है। वह शत्रुता का नाश कर विरोधियों पर विजय पाता है। दान से शत्रु मित्र बन जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण भी कहते हैं **भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्**। अर्थात् जो पापी लोग अपने शरीर पोषण के लिए कमाते पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं। देव दयानन्द तो

(शेष पृष्ठ 15 पर)

टंकारा समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	: नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: अजय सहगल
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
6.	प्रकाशक का नाम	: अजय सहगल
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
9.	सम्पादक का नाम	: अजय सहगल
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	सम्पादक का पता, उन व्यक्यिों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों:	आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मैं अजय सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.03.2023

अजय सहगल, प्रकाशक एवम् सम्पादक

हवन करिए, सेहत की हजारों नियामत पाइए

❑ योगेश मिश्र

कल तक यज्ञ-हवन को आध्यात्मिक बताकर तमाम नास्तिकों द्वारा सिरे से खारिज कर देने वालों को अब स्वस्थ्य जीवन और प्रदूषणमुक्त वातावरण के लिए यज्ञ और हवन की शरण में जाना ही पड़ेगा। यह अब केवल ऋग्वेद में उल्लिखित प्राचीन सत्य ही नहीं है बल्कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे 21 वीं शताब्दी में परिक्षण की कसौटी पर कस कर फायदेमंद साबित कर दिखाया है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने इस सत्य के पक्ष में वर्ष 2007 में तथ्य और प्रमाण जुटाए पर अग्निहोत्र के नाम पर बीते छह दशक से आहुतियों के असर का प्रयोग अनवरत जारी है। दूसरी ओर सिद्धार्थनगर जनपद में वेद विद्यापीठ चला रहे तेजमणि त्रिपाठी एक दशक से लोगों को यज्ञ और हवन से लाभ तो दिला ही रहे हैं साथ ही साथ आहुतियों और हवन के असर का अहसास कराने में जुटे हुए हैं।

लखनऊ स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) के वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में काफी काम किया है। हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के सहयोग से उन्होंने बीते साल हरिद्वार में हवन कार्य की सहायता से यह निष्कर्ष जुटाने में कामयाबी पाई है कि वायुमंडल में व्याप्त 94 फीसदी जीवाणुओं को सिर्फ हवन द्वारा नष्ट किया जा सकता है। इतना ही नहीं एक बार हवन करने के बाद तीस दिन तक *उसका असर रहता है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों चन्द्रशेखर नौटियाल* कहते हैं हवन के माध्यम से बीमारियों से छुटकारा पाने का जिक्र ऋग्वेद में भी है। करीब दस हजार साल पहले से भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी हवन की परंपरा चली आ रही है जिसके माध्यम से वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाया जा सकता है। एनबीआरआई के दो अन्य वैज्ञानिक पुनीत सिंह चौहान और यशवंत लक्ष्मण नेने ने भी डॉ. नौटियाल के साथ हवन के स्वास्थ्य और वातावरण पर प्रभाव पर शोध किया है। इनके लंबे-चौड़े शोध प्रबंध का छह पेज का सार यह बताता है कि हवन में बेल, नीम और आम की लकड़ी, पलाश का पौधा, कलीगंज, देवदार की जड़ गूलर की छाल और पत्ती, पीपल की छाल और तना, बेर, आम की पत्ती और तना, चंदन की लकड़ी, तिल, जामुन की कोमल पत्ती, अश्वगंधा की जड़ तमाल यानि कपूर, लौंग, चावल, जौ, ब्राह्मी, मुलैठी की जड़, बहेड़ा का फल और हर्रे के साथ-साथ तमाम औषधीय और सुर्गंधित वनस्पतियों को डालकर बंद कमरे में हवन करने से 94 फीसदी जीवाणु मर जाते हैं। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने हवन का प्रभाव भले ही छः वर्ष पहले साबित करने में कामयाबी पाई हो लेकिन तकरीबन छह दशकों से अधिक समय से महाराष्ट्र के शिवपुर जिले के वेद विज्ञान संस्थान के लोग अग्निहोत्र पात्र में हवन को वातावरण को प्रदूषणमुक्त बनाने के साथ-साथ अच्छी सेहत के लिए जरूरी बताते चले आ रहे है। संस्थान के निदेशक डा. पुरुषोत्तम राजिम वाले ने बातचीत में कहा, साठ-सत्तर देशों में हम लोग हवन के फायदे का प्रचार कर चुके हैं। परमसदगुरु श्री गजानन महाराज ने विश्व भर में हवन का महत्व बताने के लिए यह अभियान शुरू किया था लेकिन अब माइक्रोबायलॉजी से जुड़े तमाम वैज्ञानिक ही नहीं कृषि वैज्ञानिक भी अपने शोधों के माध्यम से यह साबित करने में कामयाब हुए हैं कि हवन से सेहत और वातवरण के साथ-साथ कृषि की उपज को भी बढ़ाया जा सकता है। माइक्रोबायलॉजी के वैज्ञानिक डॉ. मोनकर ने हवन के प्रभावों के अध्ययन के बाद यह साबित करने में कामयाबी पाई है कि हवन के बाद जो वातावरण निर्मित होता है उसमें विषैले जीवाणु बहुगुणित नहीं हो पाते और बेअसर हो जाते हैं। एसटाईप नाम प्राणधातक बैक्टीरिया हवन के बाद के वातावरण में सक्रिय ही नहीं रह पाता। इतना ही नहीं, वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान के लोगों की मानें तो दिल्ली में रक्षा मंत्रालय के शोध एवं विकास विंग के कर्नल गोनोचा और डॉ. सेलवराज ने भी साबित किया है कि हवन में शामिल लोगों के नशे की लत भी दूर की जा सकती है। मन मस्तिष्क में सकारात्मक भाव और विचारों का प्रादुर्भाव होता है। पूना विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के वैज्ञानिक डॉ. भुजबल का कहना है, 'अग्निहोत्र' देने से जैविक खेती की उपज बढ़ने के भी प्रमाण मिले है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने हवन का जो प्रयोग किया उसमें मंत्रोच्चारण नहीं किया गया। हालांकि वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान के लोगों ने अग्निहोत्र को धार्मिक रीतियों-पद्धतियों का भी जामा पहना रखा है। वे अग्निहोत्र सूर्यास्त एवं सूर्योदय के समय करने को कहते हैं। इनके हवन के लिए गाय के गोबर के कंडे, बिना कुमकुम हल्दी के सादे चावल, पांच-छह बूंद गाय की घी के साथ ही सूर्यास्त के समय सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदम् न मम उच्चारित करना होता है जबकि सूर्योदय के समय अग्नये स्वाहा, अग्नये इदम् न मम तथा प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदम् न मम का पाठ करते हुए तांबे के बने हुए पिरामिड आकार के अग्निहोत्र पात्र में आहुति दी जाती है। पुरुषोत्तम राजिम बताते है कि परम कम्प्यूटर बनाने वाली वैज्ञानिकों की टीम के वैज्ञानिक डॉ. भटकर ने भी हवन के वैज्ञानिक प्रभाव को स्वीकार किया है। इतना ही नहीं, उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल इलाके में गुरुकुल परंपरा के आधार पर वेद विद्यापीठ चला रहे तेजमणि त्रिपाठी किसी को भी हवन से प्राप्त होने वाले लाभ का अहसास कराने के लिए तमाम तरह के उपाय रोज-ब-रोज करते हैं। तेजमणि त्रिपाठी बताते हैं, हमारे यहां यज्ञ से पानी बरसा लेने की तमाम मिसालें मिलती हैं। सोम यज्ञ में जिस सोमलता नाम की औषधि से यज्ञ होता है उसके धुएं से प्राण में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। सोमलता का रसपान करने से नपुंसकता दूर होती है। संजीवनी यज्ञ में प्रयोग हाने वाले गिलोय यानी नीम के गुच्छ तथा घी आदि से तमाम असाध्य रोगों से निजात मिलती है।'

त्रिपाठी हवन का प्रभाव दिखाने के लिए हमेशा तैयार मिलते हैं। उनकी सलाह है कि यदि आप भी अपने घर में हवन का असर देखना चाहते है तो नागर मोथा, कपूर, कथली, सुगंध लाला, सुगंध मंत्री, सुगंध कोकिला, इंद्र जौ, जटामासी गुग्गल तथा बरगद की जड़ को मिलाकर घर में हवन करके देख सकते हैं। (साभार... संडे नई दुनिया पत्रिका)

(पृष्ठ 13 का शेष पर)

'अतिथियज्ञ' और 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' के माध्यम से ना केवल विद्वान मनुष्यों अपितु कीट पतंगों पशुओं को भी बांटने खिलाने का निर्देश देते हैं। दान दानी व बांटने वाले के उच्च स्थान का वर्णन वेदों में अनेकों स्थानों पर आया है।

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः। ऋग्वेद 10/107/2, दानी ऊंचा स्थान वा द्युलोक में परम पद को प्राप्त करते हैं। **दक्षिणानान्प्रथमो हूत एति।** ऋग्वेद 10/107/5, दानी को सबसे पहले बुलाया जाता है। **उतो रयिः पृणतो नोप दस्यति।** ऋग्वेद 10/117/1, दान का धन ना घटता है और ना ही नष्ट होता है। चाणक्य महाराज भी बांटकर खाने, त्याग व दान की प्रेरणा देते हुए कहते हैं। **उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।** अर्थात् सर्वदा स्वार्थ त्याग और दान की भावना से व्यक्ति समाज और राष्ट्र की रक्षा होती है। मनुष्य को योग्य है कि वह संग्रहीत संचित धन का दान करता रहे। बांटकर खाने वाले को इंसान और अकेले पेट भरने वाले को पशु बताते हुए पथिक जी ने खूब कहा है-**अकेले ही जो खा खाकर सदा गुजरान करते हैं, यूं भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं, पथिक जो बांटकर खाए उसे इंसान कहते हैं।।** ईश्वर प्रदत्त धन ऐश्वर्य ज्ञान उपार्जन उपरांत संग्रह करके स्वार्थ भावना को छोड़ते हुए त्यागपूर्वक उपयोग करते हुए दान भावना से सद्पुरूषों को बांटना चाहिए। इससे मनुष्य के धन ज्ञान में वृद्धि होती है।

–922/28 फरीदाबाद, प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, फरीदाबाद

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)
दूरभाष: 91-9814629410
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना

(सत्र: 2023-2024)

छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष) एवं सातवीं कक्षा में (आयु +10 से -12 वर्ष)

कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र **(मूल्य केवल 100/-)** रूपये भरकर 31.03.2023 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं।
पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- ❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 02.04.2023 दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी।
- ❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सुरेश चन्द्र मुंजाल, प्रधान

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **12000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **सुनील मानकटाला** (कोषाध्यक्ष) **अजय सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **सुनील मानकटाला** (कोषाध्यक्ष) **अजय सहगल** (मन्त्री)

अगर **समय** पर
बुरी आदत ना बदली जाए
तो **बुरी आदत**
आपका समय बदल देती है।

टंकारा समाचार मार्च 2023
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23
Posted at Patrika Channel Delhi R.M.S. on 1/2-03-2023
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.02.2023

ओ३म्

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

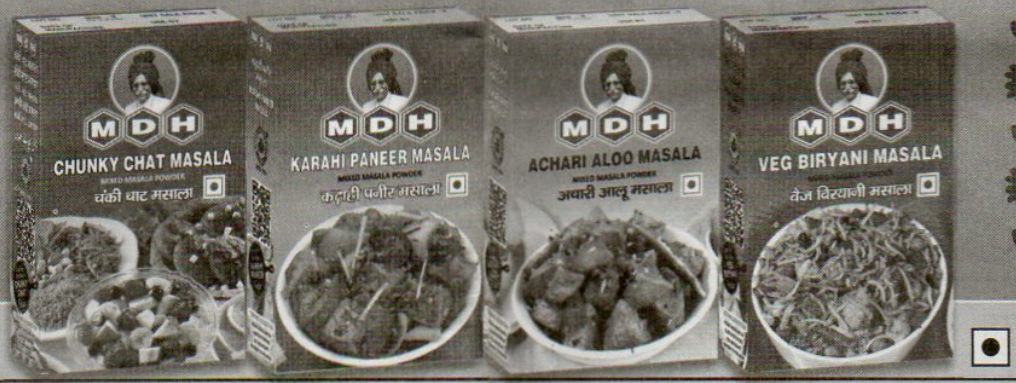

अन्य उत्कृष्ट उपयोगी उत्पादन

सोया बड़ियां | सोया बड़ियां चूरा | दंत मंजन | हींग पाउडर | केसर | हींग | हवन सामग्री

For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh
mdhspicesofficial | www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

मुद्रक व प्रकाशक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**